सूरह — एक कहानी

सूरह अत-तहरीम

रोक लगाना

पूरा सफ़र — घर, तौबा, और चार औरतें —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 66 • 12 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहन्-नबिय्यु लिम तुहर्रिमु मा अहल्लल्-लाहु लक

1. ऐ नबी! आप किस लिए उस चीज़ को हराम करते हैं जो अल्लाह ने आपके लिए हलाल की?

क़ू अन्फ़ुसकुम व अह्लीकुम नारा

6. अपने आप को और अपने घरवालों को आग से बचाओ।

तूबू इलल्-लाहि तौबतन नसूहा

8. अल्लाह की तरफ़ ख़ालिस तौबा करो।

रब्बना अत्मिम लना नूरना वग़्फ़िर लना

8. ऐ हमारे रब, हमारा नूर मुकम्मल कर दे और हमें बख़्श दे।

रब्बिब्-नि ली 'इंदक बैतन फ़िल्-जन्नह

11. ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे।

व सद्दक़त बि-कलिमाति रब्बिहा व कुतुबिह

12. और उसने अपने रब के कलिमात और उसकी किताबों की तस्दीक़ की।

बेहतरीन घर के अंदर एक इस्लाह

बेटा, यह सूरह वहाँ से शुरू होती है जहाँ से कोई इंसानी किताब कभी शुरू करने की जुर्रत न करे — अल्लाह के रसूल ﷺ के ज़ाती घर के अंदर से — और ये **उन्हीं की** एक नरम इस्लाह से शुरू होती है।

वाक़िआ, जैसा उलमा-ए-तफ़्सीर बयान करते हैं, छोटा और निहायत इंसानी था। मोहब्बत में और एक घरेलू मामले में अपनी अज़वाज को ख़ुश करने की चाहत में, नबी ﷺ ने एक क़सम खाई कि वो एक ऐसी चीज़ छोड़ देंगे जिसे अल्लाह ने उनके लिए बिल्कुल **हलाल** रखा था — एक रिवायत में, शहद। एक छोटी, ज़ाती क़सम, जो शफ़क़त से खाई गई।

और इस पर आसमान उतर आया: 'या अय्युहन्-नबिय्यु, लिम तुहर्रिमु मा

अहल्लल्लाहु लक — ऐ नबी! आप किस लिए उस चीज़ को हराम करते हैं जो अल्लाह ने आपके लिए हलाल की? वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम — और अल्लाह बख़्शने वाले, रहीम हैं।' और फिर अल्लाह ने क़समों का कफ़्फ़ारा सिखाया।

बेटा, इस शुरुआत में दो ख़ज़ाने छुपे हैं। **पहला:** कोई भी — बेहतरीन मख़लूक़ ﷺ तक — किसी हलाल को हराम नहीं बना सकता। वो क़लम सिर्फ़ अल्लाह का है। अगर **उनकी** मोहब्बत में की गई इस बात पर इस्लाह हुई, तो उस शख़्स का क्या जो अपनी राय से चीज़ें हराम क़रार दे दे, या वो ख़ानदान जो अपनी रोक-टोकें घड़ कर उन्हें दीन का नाम दे दे?

दूसरा — और ये, बेटा, क़ुरआन की सचाई की वो दलील है जिसे कोई ईमानदार ज़ेहन रद्द नहीं कर सकता। कौन सा इंसान, नुबुव्वत के दावे के लिए किताब घड़ता हुआ, अपनी ही एक नरम मलामत उसे अपनी किताब के अंदर शाया करेगा — जिसे उसके पैरोकार क़ियामत तक नमाज़ में पढ़ेंगे? एक जाली बनाने वाला अपनी छवि चमकाता है; **ये किताब सच को चमकाती है।**

एक राज़, और जिसे इत्तिला दी गई

फिर सूरह, बड़ी नज़ाकत के साथ, घर के एक ज़ाती मामले को बयान करती है: नबी ﷺ ने अपनी एक ज़ौजा को एक राज़ बताया था; वो ज़ाहिर हो गया, और अल्लाह ने आपको इसकी इत्तिला दी। 'आपने उसका कुछ हिस्सा बता दिया और कुछ से दर-गुज़र फ़रमाया' — और बेटा, इस पर रुक जाइए, क्योंकि ये बुलंद अख़लाक़ का एक सबक़ है: आपने ﷺ पूरा मामला उसके मुँह पर **नहीं** दे मारा। आपने कुछ ज़िक्र किया, और बाक़ी को फ़य्याज़ी से नज़र-अंदाज़ कर दिया।

यही इख़्तिलाफ़ में नबुव्वत का अंदाज़ है: **कभी अपना पूरा तरकश ख़ाली मत करो। ** जो कहना ज़रूरी हो कह दो; बाक़ी जाने दो। कितनी शादियाँ, दोस्तियाँ और रिश्ते, बेटा, सिर्फ़ इसलिए तबाह हो जाते हैं कि एक शख़्स **हर** नुक़्ता साबित करने पर अड़ जाता है?

फिर आयतें अज़वाज-ए-मुतह्हरात को एक मज़बूत मगर शफ़ीक़ अंदाज़ में मुख़ातिब

करती हैं: 'अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ़ तौबा कर लो — क्योंकि तुम्हारे दिल कुछ झुक गए थे...' और एक तंबीह के अगर वो उनके ख़िलाफ़ जमा हो जाएँ, तो 'अल्लाह उनके मददगार हैं, और जिब्रील, और नेक मोमिनीन, और उनके बाद फ़रिश्ते भी उनके हामी हैं।' क्या इत्तिहाद है, बेटा — और फिर भी वो उनके ख़िलाफ़ कभी इस्तेमाल न हुआ, क्योंकि वो लौट आईं। और ग़ौर कीजिए: क़ुरआन के अंदर एक ख़ानदान की मुश्किल का ईमानदारी से दर्ज होना उन मो'अज़्ज़ज़ औरतों का दर्जा कम नहीं करता; ये हमें सिखाता है कि **बेहतरीन घरों में भी लम्हे आते हैं, और अज़मत लौट आने में है।**

और उसी सिलसिले में एक आदर्श मोमिना औरत का बयान आता है — 'मुस्लिमात, मु'मिनात, क़ानितात, **ता'इबात**, 'आबिदात, साइहात' — फ़रमाँबरदार, ईमान वाली, ख़ूब इताअत करने वाली, **तौबा करने वाली**, इबादत गुज़ार, और रोज़े रखने वाली। देखिए, बेटा: 'ता'इबात', तौबा करने वाली, उन ख़ूबियों की फ़ेहरिस्त के ठीक बीच में बैठी है। अल्लाह की ज़ुबान में, **लौट आने वाला होना ख़ुद एक बुलंद दर्जे की ख़ूबी है।**

अपने आप को और अपने घरवालों को बचाओ

और अब, बेटा, वो आयत जिसे हर मोमिन वालिद को अपने दिल की दीवार पर टाँग लेना चाहिए: 'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू! क़ू अन्फ़ुसकुम व अह्लीकुम नारा — ऐ ईमान वालो! **अपने आप को और अपने घरवालों को** एक ऐसी आग से बचाओ जिसका ईंधन लोग और पत्थर हैं, जिसपर सख़्त, तुंद-मिज़ाज फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं।'

'क़ू' — उन्हें ढाल दो, उनकी हिफ़ाज़त करो। बेटा, तरतीब ग़ौर कीजिए: पहले **ख़ुद**, फिर अपना ख़ानदान। एक आदमी दूसरों के लिए चिराग़ नहीं जला सकता जब वो ख़ुद अंधेरे में बैठा हो। और ग़ौर कीजिए आयत क्या **नहीं** कहती: ये नहीं कहती 'अपने ख़ानदान को ग़ुरबत से बचाओ' या 'नाकामी से' — वो फ़िक्रें भी हैं, और जायज़ भी। ये कहती है उन्हें **आग** से बचाओ।

अली (रज़ि0) ने इस आयत की ख़ूबसूरत सादगी से वज़ाहत की: अपने घरवालों को

भलाई सिखाओ, और उनकी अदब से तर्बियत करो। उमर (रज़ि0) ने इसे सुन कर पूछा: या रसूलल्लाह, हम अपने आप को तो बचाते हैं — मगर अपने ख़ानदान को कैसे बचाएँ? आपने ﷺ फ़रमाया: उन्हें उस से रोको जिस से अल्लाह ने तुम्हें रोका, और उन्हें उस का हुक्म दो जिस का अल्लाह ने तुम्हें हुक्म दिया।

तो एक बाप की ज़िम्मेदारी, बेटा, तब पूरी नहीं होती जब फ़ीस भर दी जाए और फ़्रिज भरा हो। हलाल कमाई और रिज़्क़ एक हिस्सा है — और वुज़ू, नमाज़, सचाई, रहमत, और अल्लाह और उसके रसूल ﷺ की मोहब्बत सिखाना दूसरा हिस्सा है, और ज़्यादा भारी। **हर वालिद से उसके हाथ में दी हुई रईयत के बारे में पूछा जाएगा।**

वो तौबा जो कभी वापस न पलटे

फिर अज़ीम दरवाज़ा खोल दिया जाता है: 'या अय्युहल्-लज़ीन आमनू! तूबू इलल्लाहि तौबतन नसूहा — ऐ ईमान वालो! अल्लाह की तरफ़ **ख़ालिस** तौबा करो। 'असा रब्बुकुम अंय्-युकफ़्फ़िर 'अन्कुम सय्यिआतिकुम — उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हारी बुराइयाँ मिटा देगा और तुम्हें उन बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं।'

'नसूहा', बेटा — नुस्ह से, जिसका मतलब है पाकीज़गी और ख़ुलूस, और साथ ही दर्ज़ी का फटे कपड़े को सीने का काम। तो तौबा-ए-नसूहा एक ज़िंदगी के फटे हुए लिबास को उस धागे से दोबारा सी देती है जो ढीला नहीं पड़ता। उमर (रज़ि0) ने इसे यूँ बयान किया: कि एक शख़्स गुनाह करे, फिर तौबा करे, और उस की तरफ़ फिर कभी न लौटे — उस दूध की तरह जो थनों में वापस नहीं जाता। और उलमा ने उसकी शर्तों को सादगी से गिनाया: गुनाह छोड़ दो, दिल में उस पर नदामत करो, पुख़्ता इरादा करो कि फिर कभी नहीं लौटोगे — और अगर उस में किसी दूसरे का हक़ शामिल हो, तो वो हक़ लौटा दो या उस से माफ़ी माँगो।

और बेटा, अल्फ़ाज़ में छुपी रहमत ग़ौर कीजिए: **"असा रब्बुकुम — शायद तुम्हारा रब..."** ख़ालिस तौबा के बाद भी, क़ुरआन बंदे को पुर-उम्मीद मगर आजिज़ रखता है — न कभी हक़दार समझने वाला, न कभी मायूस। बंदा तौबा करता है; क़ुबूलियत एक अता ही रहती है।

और उस दिन मोमिनीन का बयान: 'नूरुहुम यस्'आ बैन अयदीहिम व बि-अयमानिहिम — उनका नूर उनके आगे और उनके दाएँ दौड़ रहा होगा — यक़ूलून रब्बना अत्मिम लना नूरना वग़्फ़िर लना — वो कहेंगे: **ऐ हमारे रब, हमारा नूर मुकम्मल कर दे और हमें बख़्श दे।**'

बेटा, ये दुआ याद कर लीजिए। उस दिन, पुल पर, हर एक के पास उतना नूर होगा जितना उसने भेजा — किसी के पास पहाड़ जितना, किसी के पास अंगूठे के पोर जितना जो बुझता-जलता रहेगा। और वो सब यही पुकारेंगे: **हमारा नूर मुकम्मल कर दे।** जो चीज़ आप वहाँ माँगेंगे, वो यहाँ बनाइए।

चार औरतें — और दो सबक़

और अब, बेटा, सूरह ख़त्म होते होते चार औरतों की मिसालें देती है — दो एक तरफ़, दो दूसरी — और ये पूरे क़ुरआन के सबसे ज़ोरदार सबक़ों में से एक है।

'ज़रबल्लाहु मसलल्-लिल्-लज़ीन कफ़रुम्-रअतन नूहिंव्-वम्रअत लूत — अल्लाह ने मुनकिरों के लिए **नूह की बीवी** और **लूत की बीवी** की मिसाल दी — कानता तहत 'अब्दैनि मिन 'इबादिना सालिहैनि फ़-ख़ानताहुमा — वो हमारे दो नेक बंदों के निकाह में थीं, मगर उन्होंने उनसे ख़यानत की — फ़-लम युग़्निया 'अन्हुमा मिनल्लाहि शै-अ — तो वो दोनों (नबी) उन्हें अल्लाह से बचाने में कुछ काम न आ सके — व क़ीलद्-ख़ुलुन्-नार म'अद्-दाख़िलीन — और कहा गया: दाख़िल होने वालों के साथ आग में दाख़िल हो जाओ।'

बेटा, ये ख़यानत कोई अख़लाक़ी बद-चलनी नहीं थी — उलमा साफ़ बयान करते हैं कि किसी नबी की बीवी से ऐसा कभी न हुआ। ये **दीन** में ख़यानत थी: वो इनकार करने वालों के साथ खड़ी हो गईं और अपने शौहरों के दुश्मनों की मदद की।

और सबक़ हिला देने वाला है: **दुनिया के दो सबसे नेक इंसानों की बीवियाँ होना उन्हें नहीं बचा सका।** क़ुर्बत ईमान का बदल नहीं है। किसी का बेटा, बीवी, शागिर्द, मुरीद, या किसी नेक ख़ानदान का फ़र्द होना — इनमें से कोई चीज़ आपके अपने चुनाव की जगह नहीं ले सकती। हर जान अकेली खड़ी होगी।

और फिर दूसरी तरफ़: 'व ज़रबल्लाहु मसलल्-लिल्-लज़ीन आमनुम्-रअत फ़िर'औन — और अल्लाह ने ईमान वालों के लिए **फ़िरऔन की बीवी** की मिसाल दी — इज़ क़ालत रब्बिब्-नि ली 'इंदक बैतन फ़िल्-जन्नह — जब उसने कहा: **ऐ मेरे रब, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे** — व नज्जिनी मिन फ़िर'औन व 'अमलिह — और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से नजात दे — व नज्जिनी मिनल्-क़ौमिज़्-ज़ालिमीन — और मुझे ज़ालिम क़ौम से नजात दे।'

बेटा, इस दुआ की तरतीब को ग़ौर से देखिए, क्योंकि ये कमाल की है। वो दुनिया के सबसे बड़े ज़ालिम के महल में रहती थी — सोने और ग़ुलामों के बीच — और उसने **पहले घर माँगा, फिर नजात।** और घर भी कैसा: 'इंदक' — **अपने पास** — पहले पड़ोसी, फिर मकान। उसे महल नहीं चाहिए था; उसे **क़ुर्ब** चाहिए था।

और सबक़ पहली मिसाल का बिल्कुल आईना है: जैसे नेक शौहर बुरी बीवी को नहीं बचा सका, वैसे ही बुरा शौहर एक नेक औरत को तबाह नहीं कर सका। **आपका माहौल आपका अंजाम तय नहीं करता।** आप तारीख़ के सबसे बुरे घर में रह कर भी जन्नत का घर माँग सकते हैं।

और आख़िर में: 'व मरयमब्-नत 'इमरान अल्लती अह्सनत फ़र्जहा — और मरयम, 'इमरान की बेटी, जिसने अपनी पाकदामनी की हिफ़ाज़त की — फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहि मिर्-रूहिना — तो हमने उसमें अपनी रूह में से फूँका — **व सद्दक़त बि-कलिमाति रब्बिहा व कुतुबिही** — और उसने अपने रब के कलिमात और उसकी किताबों की **तस्दीक़** की — व कानत मिनल्-क़ानितीन — और वो ख़ूब इताअत करने वालों में से थी।'

बेटा, मरयम (अलैहा0) की तारीफ़ में जो चीज़ें चुनी गईं वो देखिए: पाकदामनी, तस्दीक़, और मुसलसल इताअत। और वो लफ़्ज़ 'क़ानितीन' — मर्दाना सीग़े में — गोया उन्हें उस बुलंद जमाअत में शामिल किया गया हो जहाँ मर्द और औरत का फ़र्क़ बाक़ी नहीं रहता; सिर्फ़ बंदगी बाक़ी रहती है।

तो ये सूरह, जो एक घर की एक छोटी सी बात से शुरू हुई थी, चार औरतों पर ख़त्म

होती है — दो जिन्हें क़ुर्बत न बचा सकी, और दो जिन्हें माहौल न रोक सका। **और दोनों तरफ़ का फ़ैसला एक ही चीज़ ने किया: उनका अपना चुनाव।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. कोई हलाल को हराम नहीं बना सकता — वो क़लम सिर्फ़ अल्लाह का है; अपनी रोक-टोकों को दीन का नाम मत दीजिए।

2. इख़्तिलाफ़ में अपना पूरा तरकश ख़ाली मत कीजिए — जो कहना ज़रूरी हो कहिए, बाक़ी फ़य्याज़ी से जाने दीजिए।

3. 'ता'इबात' — लौट आने वाला होना ख़ुद एक बुलंद ख़ूबी है, कोई शर्मिंदगी नहीं।

4. पहले ख़ुद को, फिर अपने घर को — और उन्हें ग़ुरबत से नहीं, **आग** से बचाइए: सिखाइए वो जो अल्लाह ने आपको सिखाया।

5. तौबा-ए-नसूहा वो है जो कभी वापस न पलटे — और हक़ किसी बंदे का हो तो वो लौटाना भी उसका हिस्सा है।

6. 'रब्बना अत्मिम लना नूरना' अभी माँगिए और वो नूर आज ही बनाइए जो उस पुल पर काम आएगा।

7. क़ुर्बत नहीं बचाती और माहौल तबाह नहीं करता — आसिया (रज़ि0) ने फ़िरऔन के महल में बैठ कर जन्नत का घर माँगा।

रब्बिब्-नि ली 'इंदक बैतन फ़िल-जन्नह — या अल्लाह, हमें और हमारे घरवालों को आग से बचाइए, हमारी तौबा ख़ालिस कर दीजिए, और हमें अपने पास एक घर अता फ़रमाइए। आमीन।